• तिरुमाला...

विशेष प्रसाद

आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले में तिरुमाला में प्रतिदिन भगवान वेंकटेश्वर को विभिन्न प्रकार के अन्न प्रसाद, पेस्ट्री और मिठाइयां अर्पित की जाती हैं. सुबह, दोपहर और शाम को आयोजित होने वाले नैवेद्यम कैंकर्यम के दौरान विशेष प्रसाद अर्पित करना एक परंपरा है। पुलीहोरा, पोंगाली, लड्डू और वड़ा जैसे प्रसादों को भक्त बड़े चाव से ग्रहण करते हैं। मंदिर में प्रसाद वैखानस आगम शास्त्र के अनुसार तैयार किया जाता है। प्रसाद मंदिर परिसर में ही पूर्ण शुद्धता और पारंपरिक विधियों से बनाया जाता है।

प्रसाद तैयार करने में उपयोग की जाने वाली सामग्री, बर्तनों और पकाने की विधियों के लिए विशेष नियम हैं. यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि भगवान वेंकटेश्वर को अर्पित किए जाने वाले प्रसाद में सूखी मिर्च और हरी मिर्च के स्थान पर काली मिर्च का प्रयोग किया जाता है. वैखानस परंपरा में, पुलीहोरा को 'तिन्त्रिनिरासन्नम', घी पोंगाली को 'मुद्गन्नम', गुड़ चावल को 'गुदन्नम', काली मिर्च चावल को 'मरिच्यन्नम', वड़ा को 'मशपूपम' और डोसा को 'चक्रप्पम' कहा जाता है।

▶ कुल 45 प्रकार के प्रसाद अर्पित किए जाते हैं-भगवान को प्रतिदिन कुल 45 प्रकार के प्रसाद अर्पित किए जाते हैं। इनमें से 20 प्रकार के अन्न प्रसाद होते हैं, जबकि शेष पन्यारम होते हैं, अर्थात आटे के व्यंजन और अन्य सामग्रियां. मंदिर में प्रथम पहर के बाद सुबह का प्रसाद चढ़ाया जाता है। इस दौरान भगवान को मातृन्नम, मुदगन्नम (घी पोंगली), तिनत्रिनिरसन्नम (पुलिहोरा), दध्योदनम (पेरुगन्नम), गुडन्नम (गुड़ चावल), सकन्नम (कदंबम चावल) और सरकारन्नम (रव्वकेसरी) जैसी सामग्रियां अर्पित की जाती हैं।

इनके साथ-साथ चार प्रकार के आटे के व्यंजन जैसे लड्डुकम (लड्डू), मशपुपम (वड़ा), गुडप्पम (अप्पम), और चक्रप्पम (डोसा) का भी भोग लगाया जाता है। फिर दोपहर का प्रसाद राजभोगम के रूप में किया जाता है. इस दौरान भगवान को शुद्धनम (सफेद चावल), पुलिहोरा, गुडन्नम, दध्योदनम, सीरा या सक्कराभात जैसे प्रसाद चढ़ाए जाते हैं. रात में, मरिच्यानम (काली मिर्च चावल), चक्रप्पम (डोसा), लड्डू, मसपूपम (वड़ा) और गन्ना जैसी वस्तुएं अर्पित की जाती हैं।

▶ संध्याकालीन उपासना के अंतर्गत गर्भगृह की सफाई होती है-संध्याकालीन उपासना के अंतर्गत गर्भगृह की सफाई की जाती है और भगवान को ताजे फूल चढ़ाए जाते हैं। इसके बाद होने वाले कैंकर्य अनुष्ठान में मध्यरात्रि को 'थिरुवीसम' नामक विशेष प्रसाद चढ़ाया जाता है।

• मंगलवार...

हनुमान जी की पूजा

हिंदू धर्म में मंगलवार का दिन भगवान हनुमान जी को समर्पित माना जाता है. मान्यता है कि इस दिन बजरंगबली की विधि-विधान से पूजा करने और उनका स्मरण करने से भक्तों के जीवन के संकट दूर होते हैं। हनुमान जी को संकटमोचन भी कहा जाता है। यही वजह है कि मंगलवार के दिन बड़ी संख्या में भक्त मंदिरों में जाकर बजरंगबली के दर्शन करते हैं और उनसे सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना करते हैं।



धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मंगलवार को सिर्फ पूजा-पाठ ही नहीं, बल्कि कुछ खास उपाय करने से भी हनुमान जी की कृपा प्राप्त की जा सकती है. इस दिन बजरंगबली को उनकी प्रिय चीजें अर्पित करने, मंत्रों का जाप करने और हनुमान चालीसा का पाठ करने से विशेष पुण्य मिलता है।

अगर आप भी हनुमान जी को प्रसन्न करना चाहते हैं, तो मंगलवार के दिन ये आसान उपाय कर सकते हैं-

▶▶ सिंदूर और चमेली का तेल चढ़ाएं-मंगलवार के दिन हनुमान मंदिर जाकर बजरंगबली को सिंदूर और चमेली का तेल अर्पित करना शुभ माना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि ऐसा करने से हनुमान जी प्रसन्न होते हैं और भक्तों पर अपनी कृपा बनाए रखते हैं।

▶▶ हनुमान चालीसा का पाठ करें-मंगलवार की सुबह स्नान करके साफ वस्त्र पहनें और हनुमान जी के सामने बैठकर श्रद्धापूर्वक हनुमान चालीसा का पाठ करें। मान्यता है कि नियमित रूप से इसका पाठ करने से मन को शांति मिलती है और जीवन की परेशानियों से लड़ने का साहस मिलता है।

▶▶ गुड़ और चने का भोग लगाएं-बजरंगबली को गुड़ और चने का भोग लगाना भी बेहद शुभ माना जाता है। मंगलवार के दिन पूजा के दौरान उन्हें गुड़-चना अर्पित करें। इसके अलावा बंदरों को केला या गुड़-चना खिलाने की भी परंपरा है।

▶▶ शाम के समय दीपक जलाएं-मंगलवार की शाम को हनुमान मंदिर या घर के पूजा स्थल पर सरसों के तेल अथवा शुद्ध घी का दीपक जलाएं। इस दौरान हनुमान जी का ध्यान करें और परिवार की सुख-शांति की कामना करें।

▶▶ 108 बार मंत्र का जाप करें-हनुमान जी की पूजा के दौरान 'ॐ हनुमते नमः' या 'श्री राम जय राम जय जय राम' मंत्र का 108 बार जाप करें। मान्यता है कि श्रद्धा के साथ मंत्र जाप करने से बजरंगबली का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

सुंदरकांड या बजरंग बाण का पाठ करें-अगर आप किसी परेशानी से जूझ रहे हैं या किसी विशेष मनोकामना की पूर्ति चाहते हैं, तो मंगलवार के दिन सुंदरकांड या बजरंग बाण का पाठ कर सकते हैं. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इनका पाठ करने से नकारात्मकता दूर होती है और भक्तों को मानसिक बल मिलता है।



किस पहर पूजा करना सबसे सही

हिंदू धार्मिक परंपराओं में दोपहर के समय भगवान को भोग लगाने के बाद विश्राम कराने की मान्यता कई मंदिरों और घरों में प्रचलित है।

खासतौर पर दोपहर के समय, जब भगवान को राजभोग या मध्याह्न भोग अर्पित किया जाता है, उसके बाद विश्राम का भाव रखा जाता है। कुछ मंदिरों में इस दौरान दर्शन भी बंद रहते हैं और मंदिर के कपाट कुछ समय के लिए बंद कर दिए जाते हैं...

हिंदू धर्म में पूजा-पाठ केवल भगवान के सामने दीपक जलाने या मंत्र पढ़ने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें समय, नियम और श्रद्धा का भी विशेष महत्व माना जाता है। घरों में सुबह और शाम पूजा करने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। कई लोग ब्रह्म मुहूर्त में उठकर भगवान का ध्यान करते हैं, तो कुछ लोग शाम को दीपक जलाकर आरती करते हैं। हालांकि, धार्मिक मान्यताओं में दिन का एक ऐसा समय भी बताया गया है, जब भगवान को भोग लगाने के बाद विश्राम कराने की परंपरा होती है। आइए जानते हैं, दिन के किस समय पूजा करना शुभ माना जाता है और किस समय भगवान को विश्राम देने की परंपरा है।

● किस समय भगवान को विश्राम देने की है मान्यता?

हिंदू धार्मिक परंपराओं में दोपहर के समय भगवान को भोग लगाने के बाद विश्राम कराने की मान्यता कई मंदिरों और घरों में प्रचलित है। खासतौर पर दोपहर के समय, जब भगवान को राजभोग या मध्याह्न भोग अर्पित किया जाता है, उसके बाद विश्राम का भाव रखा जाता है। कुछ मंदिरों में इस दौरान दर्शन भी बंद रहते हैं और मंदिर के कपाट कुछ समय के लिए बंद कर दिए जाते हैं।



आमतौर पर दोपहर करीब 12 बजे से 3 या 4 बजे के बीच कई परंपराओं में विश्राम का समय माना जाता है।

● ब्रह्म मुहूर्त में पूजा और ध्यान

ब्रह्म मुहूर्त को पूजा-पाठ, ध्यान, योग और आध्यात्मिक साधना के लिए बेहद शुभ माना जाता है। यह समय सूर्योदय से पहले का होता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस समय वातावरण शांत रहता है और मन भी एकाग्र होने में मदद मिलती है। ऐसे में सुबह जल्दी उठकर स्नान करने के बाद भगवान का ध्यान, मंत्र जाप और पूजा करना अच्छा माना जाता है। जो लोग नियमित साधना करते हैं, उनके लिए ब्रह्म मुहूर्त विशेष महत्व रखता है.

● सूर्योदय के समय पूजा करना

सुबह सूर्योदय के समय भगवान की पूजा करना भी शुभ माना जाता है. इस समय सूर्य देव को जल अर्पित करने, गायत्री मंत्र का जाप करने और अपने आराध्य का ध्यान करने की परंपरा है। सुबह का समय दिन की शुरुआत सकारात्मक विचारों और आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ करने का अवसर देता है।

● संध्या के समय दीपक और आरती

सूर्यास्त के समय यानी संध्या काल में भी पूजा-पाठ करना शुभ माना जाता है। इस समय घर के मंदिर में दीपक जलाने, भगवान की आरती करने और मंत्रों का जाप करने की परंपरा है। कई घरों में शाम को तुलसी के पौधे के पास दीपक जलाया जाता है. मान्यता है कि संध्या के समय पूजा करने से घर में सकारात्मकता बनी रहती है।

● प्रदोष काल में भगवान शिव की पूजा

प्रदोष काल सूर्यास्त के आसपास का विशेष समय माना जाता है। हिंदू धर्म में इस समय भगवान शिव की पूजा का विशेष महत्व बताया गया है। खासतौर पर प्रदोष व्रत के दिन इस समय शिवलिंग का पूजन, जलाभिषेक, दीपदान और मंत्र जाप किया जाता है। धार्मिक मान्यता है कि प्रदोष काल में भगवान शिव की आराधना करने से उनकी कृपा प्राप्त होती है। इसलिए शाम के समय पूजा करने वालों के लिए यह समय विशेष माना जाता है।

● क्या दोपहर में पूजा करना अशुभ होता है?

दोपहर में पूजा करना हर स्थिति में अशुभ नहीं माना जाता। हिंदू धर्म में अलग-अलग देवी-देवताओं, व्रतों और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए अलग-अलग पूजा समय निर्धारित होते हैं। कई पर्वों पर मध्याह्न पूजा का विशेष महत्व होता है. उदाहरण के तौर पर भगवान राम के जन्मोत्सव यानी रामनवमी पर मध्याह्न काल में पूजा की जाती है। इसी तरह कुछ विशेष व्रतों और अनुष्ठानों में दोपहर का समय भी शुभ माना जाता है। इसलिए भगवान के विश्राम से जुड़ी मान्यता को सामान्य पूजा के लिए कठोर नियम नहीं माना गया है। बस भगवान के विश्राम के समय को देखते है ज्यादातर लोग सुबह और शाम को ज्यादा पूजा करना पसंद करते हैं।

■ पं. नित्यानंद

• वास्तु...

मां काली



मां काली की तस्वीर रखना बिलकुल गलत नहीं है, लेकिन उनकी पूजा या तस्वीर रखने के लिए कुछ विशेष वास्तु नियम बनाए गए हैं और उनका पालन करना जरूरी है। मां काली को नकारात्मक शक्तियों का नाश करने वाली और भक्तों की रक्षा करने वाली देवी माना गया है। उनकी उपासना से साहस, आत्मविश्वास और बुराइयों से लड़ने की शक्ति मिलती है। इसी वजह से लोग माता काली की तस्वीर की पूजा करते हैं। वहीं उनकी तस्वीर रखने के लिए एक सबसे जरूरी नियम यह है कि उनकी तस्वीर आप तभी घर में रखें जब आपको सिद्धि प्राप्त हो या उसके लिए आपने दीक्षा ली हो। कभी भी माता काली की तस्वीर बिना सिद्धि प्राप्त किए हुए घर में नहीं रखनी चाहिए। यदि आपको माता काली को घर में स्थापित करने के लिए दीक्षा प्राप्त है, तो आप घर के पूजा स्थल को साफ-सुथरा और शांत रखें। वहीं मां काली की तस्वीर लगाने के लिए पूजा घर या को ऐसा स्थान चुनें, जहां नियमित रूप से उनकी पूजा-अर्चना की जा सके। माता काली की ऐसी तस्वीर लगाएं, जिसमें उनका स्वरूप स्पष्ट और श्रद्धा भाव जगाने वाला दिखाई दे रहा हो।

• खाली बर्तन...



वास्तु शास्त्र में घर के ब्रह्म स्थान पर आपको कभी भी कोई खाली बर्तन नहीं रखना चाहिए। यह एक ऐसा स्थान है जो घर के बीचों-बीच पड़ता है। वास्तु के अनुसार, इस स्थान पर कभी भी खाली बर्तन, कबाड़ या अनावश्यक सामान इकट्ठा नहीं रखना चाहिए। ऐसा करने से घर की ऊर्जा का संतुलन प्रभावित हो सकता है। उत्तर दिशा का संबंध धन के देवता कुबेर से माना जाता है। इस दिशा को आर्थिक उन्नति और समृद्धि से जोड़कर देखा जाता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित